

---

Krishaka



कृषकः



## Document Information



---

Text title : Krishaka

File name : kRRiShakaH.itx

Category : misc, sanskritgeet

Location : doc\_z\_misc\_general

Author : Kapiladeva Dwivedi

Proofread by : Mandar Mali

Translated by : Mandar Mali

Description/comments : Rashtragitanjali, Kapiladeva Dwivedi (Ed.)

Acknowledge-Permission: Kapiladeva Dwivedi, Vishvabharati Anusandhan Parishad, Varanasi

Latest update : May 1, 2020

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

May 31, 2020

*sanskritdocuments.org*



कृषकः



(गीतिका) (मात्रासमकजाति)  
जयतु कर्षको भारत-त्राता,  
अन्न-धान्य-धन जीवन-दाता ।  
शान्त-साधकः प्रतिपल योद्धा  
कृति-तति-रक्त-दोष-संशुद्धा ॥ जयतु० ॥

शीत-ग्रीष्म-भय-संशय-मुक्तः,  
शक्तिशालि-वृषभ-द्वय-युक्तः ।  
आत्मत्यागरतिरन्न-प्रदाता,  
भारत-भू-हित-जीवन-दाता ॥ जयतु० ॥

कर्मरतः कृषि-कर्म-प्रवीणो  
दैन्य शोक-संशोषण-क्षीणः ।  
लोक-रक्षको लोक शोषितः  
पौर-रक्षकः पौर-भक्षितः ॥ जयतु० ॥

मान-लोभ-मद-दोष-वर्जितः,  
शिक्षित-शासक-वर्ग-तजितः ।  
सकल-लोक-सस्यान्न-प्रदाता  
सततमभाव-दैन्य-सन्धाता ॥ जयतु० ॥

क्लान्ति श्रान्ति-भय-क्षोभ-विमुक्तः,  
पौर शान्ति-सुख-वैभव रिक्तः ।  
अज्ञानान्ध-प्रसारण-युक्तः,  
ज्ञान-दीधितेर्गौरव मुक्तः ॥ जयतु० ॥

त्याग-तपस्या-संयम-मूर्तिः  
दुःख-द्वन्द्व-सहनाऽश्रित-शक्तिः ।  
ताप-शीत-वर्षा-भय-मुक्तः,

निज-कृषि-कर्मणि प्रतिपल-युक्तः ॥ जयतु० ॥

भारत-भूमि कृषक-निर्भरा,  
कृषक-पोषिता, कृषकैर्गुप्ता ।

कृषक-पोषणे भारत-पुष्टिः  
कृषक-पीडने- भारत-पीडा ॥ जयतु० ॥

बीज-खाद्य-सुविधा तु समस्ता  
भारत-ग्रामे प्रतिपदमिष्टा ।  
धान्यवृद्धिरिह देश-समृद्धिः  
सस्यवृद्धिरिह गौरव-वृद्धिः ॥ जयतु० ॥

ग्राम शोषणं दीन-शोषणं,  
कृषक-शोषणं भारत-दुःखम् ।  
कृषेरुन्न्तः भारत-वृद्धिः,  
कृषेर्विकासो जनता- हासः ॥ जयतु० ॥

कृषक-गौरवं प्रतिपद रम्यं  
कृषक-समृद्धिः भारत-वृद्धिः ।  
कृषक-सुरक्षा भारत-रक्षा  
कृषक-विभूतिः भारत-भूति ॥ जयतु० ॥

Proofread by Mandar Mali

---

—  
*Krishaka*  
—

pdf was typeset on May 31, 2020

—

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

